OCTOBER TO DECEMBER 2016-17

इंदिरा किसान मितान (अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर)2016

आगामी तीन माह की प्रस्तावित गतिविधियाँ

प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	प्याज	भीमा शक्ति	प्याज की उन्नत किस्म का आकलन	0.4	05
2.	बत्तख	व्हाईट पैकिन	बत्तख सह मछली पालन का आकलन	20 नग	04
3.	चना	JAKI- 9218	चने में कॉलर राट के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडर्मा के प्रभाव का आकलन	0.8	04
4.	गेहूँ	सी.जी. -03	सेल्फ प्रोपेल्ड वर्टीकल कनवेयर रिपर द्वारा गेहूँ की कटाई का आकलन	1.0	04
5.	अरहर	आशा	रबी अरहर का आकलन	0.8	04
6.	मछली	रोहू,कतला मृगल	ग्रामीण तालाब में मत्स्य बीज उत्पादन का आकलन	0.5	04
योग				3.5	25

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	टमाटर	अरका रक्षक	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.4	5
2.	गाय	देशी	बाह्य परजीवी के नियंत्रण हेतु नीम एवं करंज तेल के प्रभाव का प्रदर्शन	24 पशु सं.	12
3.	गाय	देशी	अंत: परजीवी के नियंत्रण हेतु व्यापक श्रेणी की परजीवी नाशक दवाईयों के प्रभाव का प्रदर्शन	24 पशु सं.	12
4.	चना	जे.जी -130	सीडकम फर्टीलाईजर ड्रील द्वारा चना की बुवाई का प्रदर्शन	05	13
5.	गेहूँ	सी.जी. -03	सीडकम फर्टीलाईजर ड्रील द्वारा गेहूँ की बुवाई का प्रदर्शन	05	13
6.	गेहूँ	सी.जी. -03	गेहूँ की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	05	12
7.	चना	JAKI- 9218	चने में इल्ली नियंत्रण का समन्वित प्रदर्शन	05	12
8.	चना	जे.जी -130	चना की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	05	12
9.	मशरूम	आयस्टर	आयस्टर मशरूम उत्पादन का प्रदर्शन	-	12
10	गन्ना	सी.ओ. 86032	गन्ने में लाल सड़न बीमारी के प्रबंधंन हेतु टेबुकोनाजोल 0.1 प्रतिशत से बीज उपचार का प्रदर्शन	05	12
योग				30.4	115

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	चना	JAKI- 9218	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	20	50
2.	अरहर	एल.आर.जी. 41	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	08	20
योग				28	70

SEED HUB योजना अंतर्गत बीजोत्पादन कार्यक्रम

क्र.	फसल	प्रजाति	उत्पादित बीज का प्रकार	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	चना	JAKI- 9218	प्रमाणित	44	08

LDFE योजना अंतर्गत

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	चना	JAKI- 9218	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	06	15

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	90
2.	पौध संरक्षण	4	1	88
3.	उद्यानिकी	4	1	87
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	84
6.	मत्स्यकी	4	1	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	600

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिक का खेतो में भ्रमण	20	60
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	80	80
प्रक्षेत्र दिवस	03	300
योग	103	440

NFDB राष्ट्रीय मत्स्यकीय विकास बोर्ड हैदराबाद अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.	प्रशिक्षण	संख्या	अवधि	ग्राम	लाभार्थी
1.	मिश्रित मछली पालन	1	5	पनेका	20
2.	समन्वित मछली पालन	1	5	पनेका	20
योग		2	10		40

बीजोत्पादन कार्यक्रम

(कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र में रबी 2016 -17 में बीज उत्पादन कार्यक्रम)

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित बीज का प्रकार	रकबा (हे.)
1.	अरहर	आशा	प्रमाणित	2.0
2.	चना	JAKI- 9218	प्रमाणित	9.0
योग				11.0

बुक-पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-299124
E-mail: kvkkawardha@yahoo.in

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. ....
....
....

उन्नत कृषि — समृद्ध किसान

इंदिरा किसान मितान
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

अंक-27 — त्रैमासिक पत्रिका, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर 2016 — वर्ष-9

संपादक मंडल
संरक्षक : डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
मार्गदर्शक : डॉ. एम.पी.ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवाऐं, इं.गां.कृ.वि.रायपुर (छ.ग.)
प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
आंच. परियोजना निदेशक जोन-7 (भा.कृ.अनु.परि.) जबलपुर
प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
संपादक : डॉ. नूतन रामटेके
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन
सह संपादक :
इं.टी.एस.सोनवानी — कृषि अभियांत्रिकी
श्रीमती प्रमिला कांत — उद्यानिकी
श्री बी.एस.परिहार — सस्य विज्ञान
कु.मनीषा खापर्डे — मात्स्यिकी
श्री वाई.के. कौशिक — कार्यक्रम सहायक
श्रीमती स्वाती शर्मा — कार्यक्रम सहायक

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा हरियर छत्तीसगढ़ मनाया गया

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. बी. पी. त्रिपाठी एवं वस्तु विशेषज्ञों तथा अन्य कर्मचारियों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रक्षेत्र में दिनांक 08.07.2016 को विभिन्न पौधे रोपे गये साथ ही साथ पर्यावरण संरक्षित व स्वच्छ रखने की शपथ ली। इसी तारतम्य में लगभग 2000 हजार पौधे कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र एवं अन्य ग्राम - रामपुर, चीलमखोदरा एवं भैंसाडबरा में कृषकों को वितरित किए गए।

कलेक्टर द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का प्रक्षेत्र भ्रमण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा प्रक्षेत्र नेवारी में पैडी ट्रांसप्लांटर द्वारा धान की रोपाई का दिनांक 27.07.2016 को कलेक्टर महोदय श्री धनंजय देवांगन (आई.ए.एस.) जिला कबीरधाम द्वारा निरीक्षण किया गया एवं पैडी ट्रांसप्लांटर से रोपा लगाकर रकबा बढ़ाने की बात कही। इस अवसर पर ग्राम नेवारी एवं आसपास के कृषकों ने भी धान की रोपाई विधि का जीवंत प्रदर्शन देखा। कलेक्टर महोदय द्वारा प्रक्षेत्र में लगे धान की 22 किस्मों के क्राप कैफेटेरिया सोयाबीन में इंदिरा सोया सीड ड्रील से बोवाई पद्धति, प्रक्षेत्र निर्मित तालाब एवं तालाब के मेढ़ पर लगे अरहर एवं जिमीकंद की फसल तथा सोयाबीन, मूंग एवं गन्ने की क्राप कैफेटेरिया, मातृ बगीचा एवं सोयाबीन, अरहर की अंतवर्तीय फसल का अवलोकन किया।

सेवारत कर्मियों हेतु प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में कृषि विभाग के सेवारत कर्मचारियों हेतु प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 08.08.2016 से 11.08.2016 तक किया गया। प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के कार्यक्रम समन्वयक द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों की जानकारी तथा आयस्टर मशरूम की उत्पादन तकनीकी के बारे में विस्तृत जानकारी दिया गया। संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, कवर्धा के प्राध्यापकों एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न विषयों जैसे प्रमुख खरीफ फसलों में खरपतवार, जल प्रबंधन, उर्वरक, प्रमुख खरीफ फसलों में रोग प्रबंधन, कीट प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य एवं जैविक खेती, कृषि यंत्रों की उपयोगिता, उद्यानिकी फसलों की उत्पादन तकनीक, ट्राइकोडर्मा की उपयोगिता, बीज उत्पादन तकनीकी, पशुओं में होने वाले संक्रामक रोग एवं उसका निदान तथा मछली पालन हेतु तलाब का प्रबंधन पर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कबीरधाम जिले के 04 ब्लाक कवर्धा, पण्डरिया, सहसपुर लोहारा एवं बोड़ला ब्लाक के कृषि विभाग के कर्मचारियों उपस्थित रहें।

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा Livelihood in full Employment (LIFE) योजनान्तर्गत प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 19.9.2016- 24.9.16 को **Livelihood in full Employment (LIFE)** योजनांतर्गत जिले के 30 कृषक जिन्होने मनरेगा रोजगार गारंटी योजनांतर्गत 100 दिन का रोजगार पूर्ण कर लिया है के लिए 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में कृषकों को समन्वित कृषि प्रणाली विषय पर सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक व्याख्यान कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दिया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मनरेगा अंतर्गत रोजगार पूर्ण कर चूके कृषकों को प्रशिक्षित किया जाना है। ताकि वे समन्वित कृषि प्रणाली के सिद्धांतो का अपनाकर कृषि को अपना रोजगार बना सकें। समन्वित कृषि प्रणाली के मुख्य घटकों में मछली पालन, पशुपालन एवं प्रबंधन, मशरूम उत्पादन, ट्राइकाडर्मा उत्पादन, जैविक खेती एवं वर्मी कम्पोष्ट बनाने की विधि, सब्जियों का उत्पादन, दलहन एवं तिलहन फसलों की बीज उत्पादन तकनीक, प्रमुख कृषि यंत्रों का उपयोग एवं महत्व इत्यादि शामिल है।

OCTOBER TO DECEMBER 2016-17

विगत तीन माह की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा का निरीक्षण

डॉ. प्रेमचंद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, अटारी जोन -7 भा.कृ.अ.प. जबलपुर द्वारा दिनांक 20.9.2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र का निरीक्षण किया गया। डॉ. प्रेमचंद द्वारा समूह फसल प्रदर्शन का अवलोकन किया गया साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र में लगे धान की 22 किस्मों की काप कैफेटेरिया, सोयाबीन, मूंग, अरहर, मातृ बगीचा, तालाब एवं पशुशाला का अवलोकन किया गया। डॉ. प्रेमचंद द्वारा कृषि विज्ञन केन्द्र में कार्यरत समस्त विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा किए जा रहे प्रक्षेत्र परीक्षण एवं अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, प्रशिक्षण आदि की जानकारी ली एवं महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

पशु स्वास्थ्य शिविर सह कृषक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एवं पशुपालन विभाग जिला कबीरधाम के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 23.09.2016 को ग्राम सुरजपुरा में पशु स्वास्थ्य शिविर सह कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण कृषकों को पशु स्वास्थ्य संबंधित जानकारी प्रदान करना था।कृषि विज्ञन केन्द्र में पदस्थ डॉ. नूतन रामटेके ने कृषकों पशुओं के स्वास्थ्य प्रबंधन एवं टीकाकरण के महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी दी। पशुपालन विभाग में पदस्थ डॉ. अशोक बाचकर, सहायक शल्यज्ञ ने पशुओं में होने वाले संक्रामक रोग एवं उनके निदान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस कार्यक्रम में लगभग 100 जानवरो का इलाज किया गया एवं दवाईया वितरित किया गया।

प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	धान	राजेश्वरी	धान की कतार बोनी में फसल प्रबंधन का आकलन	0.8	04
2.	सोयाबीन	जे.एस.95-60	रेज्ड बेड प्लांटर से सोयाबीन की बुवाई का आकलन	1.0	05
3.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	सोयाबीन में खरपतवार नाशियों से खरपतवार प्रबंधन का आकलन	0.8	04
4.	प्याज	भीमा डार्क रेड	उन्नत किस्म का आकलन	0.4	05
5.	बैगन	छत्तीसगढ़ सफेद बैगन -1	उन्नत किस्म का आकलन	0.4	04
6.	धान	कंचन - 64	धान में आभासी कंण्डवा रोग नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.4	04
7.	धान	स्वर्णा	धान में झुलसा रोग नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.4	04
8.	मछली	रोहू, कतला, मृगल	ग्रामीण तालाब में मत्स्य बीज उत्पादन का आकलन	0.5	04
योग				4.7	30

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	अरहर	एल.आर.जी.- 41	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	8.0	20
2.	उड़द	टी.ए.यू. - 1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	4.0	10
योग				12	30

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	सीड कमफर्टीलाइजर ड्रील से सोयाबीन की कतार बोनी का प्रदर्शन	5.0	13
2.	धान	राजेश्वरी	सीड कमफर्टीलाइजर ड्रील से धान की कतार बोनी का प्रदर्शन	5.0	13
3.	धान	राजेश्वरी	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
4.	सोयाबीन	जे. एस. 97-52	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
5.	सेम	छत्तीसगढ़ सेम -1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.4	05
6.	धान	पूसा बासमती	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
7.	गाय	देशी	नीम एवं करंज तेल का बाह्य परजीवि नाशक के रूप में प्रभाव का प्रदर्शन	12 पशु	12
योग				25.4	79

समूह फसल प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	अरहर	एल.आर.जी.- 41	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	20	50
2.	मूंग	HUM - 16 SML - 668	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	20	50
योग				40	100

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	80
2.	पौध संरक्षण	4	1	70
3.	उद्यानिकी	4	1	60
4.	मृदा विज्ञान	4	1	60
5.	पशुपालन	4	1	60
6.	मत्स्यकी	4	1	60
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	60
योग		28	7	430

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिक का खेतो में भ्रमण	25	30
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	200	200
लाईफ योजना अंतर्गत मनरेगा में 100 दिन काम कर चुके कृषको को प्रशिक्षण	01 (6 दिवसीय)	30
पशु स्वास्थ्य शिविर	01	50
योग	227	310

बीजोत्पादन कार्यक्रम

(कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र में खरीफ 2016 -17 में बीज उत्पादन)

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित बीज का प्रकार	रकबा (हे.)
1.	अरहर	आशा	प्रमाणित	2.0
2.	सोयाबीन	जे. एस. 95-60	आधार	2.0
3.	सोयाबीन	जे. एस. 97 - 52	आधार	7.0
योग				11.0

अक्टूबर

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- गन्ने की शीतकालीन फसल की बुवाई करें।
- भूरा माहो के अधिक प्रकोप की अवस्था में इमीडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. का 125 मि.ली./हे. की दर से छिड़काव करें अथवा कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण का छिड़काव करें। छिड़काव पौधे के निचले हिस्से में केन्द्रित करें।
- पर्णछेद गमोट की अवस्था में विगलन (शीथरॉट) तथा लाई फूटने (फाल्स स्मट) की समस्या के नियंत्रण हेतु प्रोपिकोनाजोल का (1 मि.ली./ली) छिड़काव करें।
- दलहनी फसलों विशेष कर चना में लगने वाले भूमिजनित रोग जैसे कालर रॉट,उकठा (विल्ट) आदि रोंगों से बचाव के लिये भूमि का उपचार करें। इस हेतु जैविक फफूंदनाशक ट्राइकोडर्मा 1 किलो पाउडर को 100 किलो सड़ी हुई गोबर की खाद में अच्छी तरह मिलाकर 15-20 दिनों तक छायादार स्थान में ढेरी बनाकर उसे गीले बोरे से ढककर रखते हैं।
- इस माह के दूसरे या तीसरे सप्ताह में चने की बुवाई करने से उकठा (विल्ट) रोग कम लगता है।
- मटर की अगेती किस्मों तथा समय पूर्व बोई गई फसल पर भभूतिया रोग कम लगता है।

उद्यानिकी

- आम एवं लीची के बागों में बोर्डोपेस्ट लगावें।
- सभी प्रकार की शीतकालीन पुष्पों की बुवाई सुनिश्चित करें।
- गुलाब की कटाई - छटाई कर बोर्डोपेस्ट लगावें।

पशुपालन

- इस माह से सर्दी का मौसम शुरू हो जाता है अत: पशुओं का सर्दी से बचाव का उचित प्रबंध करें।
- अधिक चारा लेने के लिए बरसीम फसल की उन्नत किस्में बी.एल.10, बी.एल.22, वरदान, जे.एच.बी. 146 व बी.एल.42 की विजाई इस माह अवश्य कर लें
- परजीवी तथा कृमिनाशक दवा घोल देने का समय भी उपयुक्त है। परजीवी नाशक दवा को बारी - बारी से बदलकर उपयोग में लें।
- पशुओं को लवण मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बांटे में मिलाकर दें।

नवम्बर

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- धान कटाई के उपरान्त संचित नमी के उपयोग हेतु जीरो सीडड्रिल द्वारा फसलो की बुवाई करें।
- गेहूँ के बीजों को कार्बाक्सिन मेटासिस्टाक्स + थायरम (2ग्रा./किलो बीज) की दर से उपचारित करें।
- खरीफ फसल की कटाई के पहले खेतों से जल निष्कासित जल को रबी फसल या सब्जी की फसल में उपयोग हेतु नालियों के माध्यम से प्रक्षेत्र जलाशय (डबरी) में संग्रहित करें।
- रबी दलहनी एवं तिलहनी फसलो के बुवाई इस माह में पूर्ण कर लेवें।
- चना, मसूर, मटर, सरसो आदि फसलों में नींदा नियंत्रण हेतु बुवाई के 3 दिन के अंदर पेन्डीमेथालिन दवा (30 ई.सी.) 750 मि.ली. से 1 ली. सक्रिय तत्व दवा की मात्रा 2.5-3 ली./हे. की दर से छिड़काव करें।
- अंकुरण पश्चात संकरी पत्ती वाले खरपतवार अधिक होने पर क्यूजेलोफास इथाइल नामक दवा का 40-50 मि.ली. सक्रिय तत्व (दवा की मात्रा 800 मि.ली. 1ली.) प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- अरहर में फली भेदक कीटों के नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफास 50 ई.सी. 1500 मि.ली. या वी.टी. 8 एल. 1000 मि.ली. प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

उद्यानिकी

- शीतकालीन मौसमी पुष्पों में निंदाई, गुड़ाई, सिंचाई एवं पोषण प्रबंधन करें।
- भिण्डी की फसल को पीला मोजेक बीमारी से बचाने हेतु मेटासिस्थक्ल कीटनाशक का छिड़काव करें।

पशुपालन

- थनैला रोग से बचाव के उपाय करें।
- तीन वर्ष में एक बार पी.पी. आर का टीका भेड़ और बकरियों को अवश्य लगवाए।
- पशुओं का बिछावन सूखा होना चाहिए तथा प्रतिदिन बदल दें।
- बहुऋतु घास की कटाई कर लें। इसके बाद से सुप्तावस्था में चली जाती है। जिससे अगली कटाई तापमान बढ़ने पर फरवरी - मार्च में ही प्राप्त होती है।
- पशुओं को लवण मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बाँटे मिलाकर दें।

दिसम्बर

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- गेहूँ की विलम्ब/देरी से बुवाई की दशा में बीज की मात्रा अनुशंसित मात्रा से 20-25 किलो प्रति हे.की दर से बढ़ा देवें।
- मटर में भभूतिया रोग आने पर घुलनशील गंधक/केराथेन/कार्बेन्डाजिम के दो बार छिड़काव करना चाहिए।

उद्यानिकी

- मटर में गेऊआ रोग लगने पर जिनेब/ट्राईडेमार्फ आक्सी कार्बाक्सिन फफूंदनाशी का दो बार छिड़काव करना चाहिए।
- रबी फसल व सब्जी की फसलों में प्रथम सिंचाई प्रक्षेत्र जलाशय (डबरी) में उपलब्ध पानी से करें।
- शीतकालीन मौसमी पुष्पों में सिंचाई एवं उर्वरक प्रबंधन करें।
- मिर्च के चूर्ण - मूर्डा रोग की रोकथाम के लिए मिथाईल डेमेटान कीटनाशी (1 मि.ली. प्रति ली. पानी) का छिड़काव 10-15 दिन के अंतराल पर करें।
- आम में एन्थ्रेक्नोस रोग आने पर साफ सुपर (2 ग्रा./ली. पानी) का दो बार छिड़काव 10-12 दिन के अंतराल पर करें।
- मिर्च, अदरक, गाजर, मटर, पालक, रखिया आदि से बने परिरक्षित पदार्थो को सुरक्षित करें।
- आलू में विषाणुजनित रोगों की रोकथाम हेतु मिथाइल डेमेटान (1मि.ली./ली. पानी) का छिड़काव करें।

पशुपालन

- बिजाई के 50-55 दिन के बाद बरसीम एवं 55-60 दिन बाद जई की चारे के लिए कटाई करें। इसके पश्चात बरसीम की कटाई 25 -30 दिन के अंतराल पर करते रहें।
- पशुओं को खनिज लवण - मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बाँटे में मिलाकर दें।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए पूरा दूध निकाले और दूध छोड़ने के बाद थनों को कीटाणु नाशक घोल में धो लें।
- पशुओं का सर्दी से बचाव का उचित प्रबंध करें। रात में पशुओं को अंदर गर्मी वाले स्थान, जैसे कि छत के नीचे या छाव फूल की छप्पर तले बांधे।
- पशु आहार में हरे चारे की मात्रा नियंत्रित ही रखें, व सूखे चारे की मात्रा बढ़ा कर दें। क्योंकि हरे चारे को अधिक मात्रा में खाने से पशुओं में दस्त इत्यादि की समस्या हो सकती है।